439/30/01/18

शोधार्थी	:	मीनाक्षी
शोध-निर्देशक	:	प्रो. हेमलता महिश्वर
विभाग	:	हिन्दी
विषय	:	भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में निहित नैतिक मूल्यों का द्वन्द्व

शोध-सार

पांच शीर्ष शब्द : नैतिक मूल्य, मूल्य संक्रमण, मानवीय प्रेम, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ, नियतिवाद।

नैतिकता का सीधा सम्बंध व्यक्ति और समाज से है। इस शोध प्रबंध में नैतिकता को विभिन्न आयामों में विश्लेषण किया गया है, जिसके अंतर्गत नैतिक मूल्य, अवधारणा और संकट को बदलते समय और समाज के साथ-साथ मनोविश्लेषण, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आदि विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में मूल्यांकित किया गया है। इसके लिए भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के साथ-साथ साहित्यकारों के विचारों को भी प्रमुखता से स्थान दिया गया है। सामाजीकरण की प्रक्रिया में नैतिक मूल्यों का निरंतर विकास होता रहा है। वर्तमान समय को नैतिक मूल्यों के संक्रमण के दौर में चिन्हित किया गया है। बदलते मानवीय मूल्यों के द्वारा समाज को समझा जा सकता है।

इस शोध प्रबन्ध को मैंने छः अध्यायों में विभक्त किया है - प्रथम अध्याय 'नैतिक मूल्यः अर्थ, अवधारणा और संकट' है। द्वितीय अध्याय का शीर्षक 'हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा' है। तृतीय अध्याय का शीर्षक 'भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों पर विभिन्न विचार-दर्शनों का प्रभाव' है, जिसमें वर्माजी के उपन्यासों पर नियतिवादी, गांधीवादी, मानवतावादी व्यक्तिवादी, समाजवादी विचार-दर्शनों के प्रभाव को दिखाया एवं विश्लेषित किया गया है। चतुर्थ अध्याय 'उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा' है। पंचम अध्याय का शीर्षक 'भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नैतिक मूल्यों का द्वन्द्व' है।

भगवतीचरण वर्मा के जीवन पर नियतिवादी दर्शन, व्यक्तिवादी दर्शन, गांधीवादी दर्शन, समाजवादी दर्शन एवं मनोविश्लेषणवादी दर्शन की गहरी छाप साफ झलकती है, परंतु इसके साथ-साथ उनके जीवन पर भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की एक महीन धारा गहरे अंतः स्थल में निरंतर विद्यमान रही है। युग और परिवेश का सबसे महत्वपूर्ण योगदान मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में होता ही है, इसलिए स्वतंत्रता-आंदोलन और उसके सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों को उनके समस्त साहित्य में साफ देखा जा सकता है।

शोध-प्रबंध में भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में चित्रित समाज और पात्रों के माध्यम से नैतिकता के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों की जटिलताओं को विश्लेषित किया गया है। किस तरह मनुष्य विभिन्न परिस्थितियों में अपने व्यवहार एवं मूल्य बदलता रहा है। कई बार यह बदलाव विवशतापूर्वक होते हैं तो कई बार स्वार्थों की पूर्ति के लिए। जबकि भगवतीचरण वर्मा बदलते मूल्यों एवं व्यवहारों के लिए परिस्थितियों को जिम्मेदार मानते हैं। उनके विभिन्न पात्रों के व्यवहार एवं उनके जरिए कहलवाई गई उक्तियों से साफ पता चलता है कि भगवतीचरण वर्मा नियति पर अत्यधिक बल देते हुए मनुष्य को परिस्थितियों के सामने विवश मानते हैं और उनको मूल्यों की गिरावट का जिम्मेदार भी मानते हैं। नैतिकता के विभिन्न आयामों एवं परिस्थितियों के बीच मनुष्य के बदलते व्यवहार और मूल्यों को द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया में भगवतीचरण वर्मा ने प्रामाणिक ढंग से चित्रित किया है।